डॉ० छाया चौबे
असि० प्रोफेसर - हिन्दी
एम०वी० कॉलेज, बक्सर

मैला आँचल की आंचलिकता -

फणीश्वर नाथ 'रेणु' कृत 'मैला आँचल' उपन्यास सन 1954 में लिखा गया। इसी उपन्यास से आंचलिकता की चर्चा प्रारम्भ होती है। आंचलिक पद का प्रयोग संभवतः रेणु जी ने संभवतः सबसे पहले प्रयोग किया। यद्यपि आँचलिक परम्परा में पहला लिखित उपन्यास 'देहाती दुनिया' को माना जाता है। मैला आँचल की भूमिका में रेणु जी ने लिखा है - "यह मैला आँचल एक आंचलिक उपन्यास। कथांचल है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला। - इसके एक हिस्से के एक ही गांव को पिछड़े गांवों का प्रतीक मानकर मैंने इस किताब का कथाक्षेत्र बनाया है।" इस भूमिका के आधार और उपन्यास के अन्य तथ्यों का अन्वेषण कर इसे आंचलिक उपन्यास की परम्परा में मूल्यांकित किया जाता है। आंचलिक कथा के कुछ विशेष बिन्दु होते हैं - कथा की भाषा, अंचल ही नायक रूप में, समस्त ऐतिहासिक भौगोलिक वातावरण का चित्रण, सामाजिक आर्थिक दशा का अंकन, कथाकार का तटस्थ रूप से कथा को कहना, पिछड़ापन को उद्घाटित करना। इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर मैला आँचल के आंचलिकता का मूल्यांकन किया जायेगा।

मैला आँचल उपन्यास लगभग सौ से ऊपर पात्र हैं। मुख्य पात्र अर्थात नायक के रूप में तीन-चार पात्र उभर कर सामने आते हैं। लेकिन उपन्यास के आरम्भ से अंत तक आते-आते सभी खो जाते हैं। यदि पूरे उपन्यास में प्रारम्भ से अंत तक कुछ है तो मेरीगंज गांव। समस्त विशिष्टताओं कुरूपताओं, के साथ सुन्दरता के

साथ विद्यमान है। आँचलिक उपन्यास की एक कसौटी भी मानी गयी है कि अँचल ही नायक हो। मैला आँचल में यह स्पष्ट रूप से उभर कर आता है।

अंचलिकता की प्रमुख विशिष्टताओं में उसकी भाषा भी प्रमुख रूप से आती है। आंचलिक अर्थात स्थानिय भाषा अंचल को और ज्यादा उभार कर सामने लाते है। कथा को ज्यादा जीवंत एवं अंचल के वातावरण को गोचर बनाते है। मैला आँचल की भाषा गांव के वातावरण को उभारते ही नहीं बल्कि अंचल की भाषा कम शब्द में ज्यादा भावों को उभारती है। उपन्यास के आरम्भ से अंत तक अँचलिक भाषा का पुट है। उपन्यास के शुरुआत की पंक्ति - तोबिन के वाली चोरी में बहरा चेथरु को मलेरी ने गिरफ्फ कर लिया। अंत में पेड़ पर चेथरुआ पीर की झोली झूल रही है। ऐसे अनेक शब्द - रायबरेली, डागधर, लर, टीसन, भैसचरन, भुरकुआ, लैन इत्यादि है। अनेक स्थानीय लोकगीत, वाद्ययंत्रों की आवाज के भाव भी इसकी अँचलिकता को (ताजा) तरकों बनाते है।

उपन्यास में अँचल के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दशा का अंकन इस प्रकार किया जाता है कि वह अंचल आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। मेरीगंज के नामांकरण का पूरा इतिहास उपन्यास में रोचक ढंग से किया गया साथ भौगोलिक दशा का भी। नेपाल सीमा से सटे बिहार के पूर्णिया जिले में कोसी की सहायक कमला नदी के किनारे मेरीगंज का जो भौगोलिक चित्रण लेखक ने किया है कि उपन्यास के उस अंचल में मानो हम पहुँच से जाते है।

गाँव के सामाजिक आर्थिक दशा का जो सटीक रूप रेणु जी ने मैला आँचल में उतारा है मानों पूरे भारत के गांव सामने आ जाते है। गांव में बारहों बरन के लोग रहते है। सभी

जातियों के अपने टोले हैं। अपनी सुविधा परम्परा के अनुसार एक टोले दूसरे से जुड़े हैं। सामाजिक जातिगत विद्वेष, अन्धविश्वास शोषण, धार्मिक पाखंड का चित्र रेणु जी मैला आँचल बड़ी ही सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। गरीबी, जमींदारी व्यवस्था द्वारा कृषकों का शोषण, कर्ज की समस्या, बेहालत भरे जीवन भी मैला आँचल में बड़ी सच्चाई के साथ प्रस्तुत है। ~~लकी~~ डाक्टर मन में सोचता है. कि सबसे बड़ी बिमारी है तो वह गरीबी और बेहालत भरी जिन्दगी।

रेणु जी विचारों से विचारों से सोसलिस्ट थे लेकिन पूरे उपन्यास कहीं भी अपनी विचारधारा का समर्थन नहीं करते बल्कि सोसलिस्ट पार्टी के अवसरवादिता एवं पाखंड का भी उद्घाटन करते हैं। उपन्यास की भूमिका में रेणु जी ने स्वयं कहा भी - इसमें फूल भी हैं शूल भी। गुलाब भी है, कीचड़ भी है, चन्दन की सुन्दरता भी है, कुरूपता भी - मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ, पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी नहीं महसूस करता।

जो भी ~~आंचलि~~ आंचलिक उपन्यास लिखे जाते है उसमें अंचल के पिछड़ेपन का चित्रण विशेष रूप से होता है। मैला आँचल में कथा का क्षेत्र पिछड़े अंचल को लेकर प्रस्तुत किया। अर्थात कथा इसी पिछड़ेपन को लेकर रची बुनी गयी है चाहे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जो भी प्रसंग रहा हो।

कुल मिलाकर आंचलिक उपन्यास के जो भी वैशिष्ट्य होते है सभी वैशिष्ट्य मूल्यों पर मैला आँचल एक श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास रूप में स्थापित है और अपने स्थापन को सिद्ध भी करता है।